दृष्टि अक्षम बालक(Visually Handicapped Children)

<u>दृष्टि अक्षम बालकों का वर्गीकरण</u>-मुख्य तौर पर दृष्टि दुर्बल बालकों के दो प्रकार होते हैं यह प्रकार दो आधारों पर बताए गए हैं।

1-विधिक आधार पर वर्गीकरण

2-शैक्षिक आधार पर वर्गीकरण

विधिक आधार पर वर्गीकरण दो आधार से चुना जाता है।

क-दृष्टि तीव्रता

ख-दृष्टि क्षेत्र

शैक्षिक आधार पर वर्गीकरण दो भागों में बांटा गया है।

क-नेत्रहीन

ख-आंशिक दृष्टि दोष

<u>नेत्रहीनता के कारण</u>-

ज्यादातर दृष्टि से संबंधित विकार आंखों की सफाई सफाई ना रखने, आंखों में बीमारी, बीमारी का समुचित इलाज न करा पाने तथा धूल धुआं धूप और धक्के से आंखों की रक्षा ना करना यह सब अंधापन रतौंधी या रंग अंधता को पैदा करते हैं।

<u>नेत्रहीन और आंशिक दृष्टिहीन बालकों में अंतर</u>-

1-बड़ी आसानी से और प्रारंभिक अवस्था में ही नेत्रहीन बालकों को पहचाना जा सकता है इसके विपरीत आंशिक रूप से दृष्टिहीन बालकों को पहचानना बड़ा ही कठिन होता है आर्थिक मानसिक दृष्टि वाले काफी लंबी उम्र तक अनपहचाने रह जाते हैं।

2-आंशिक दृष्टि हीनो में दृष्टि दोष कुछ सीमा तक होता है पर नेत्रहीन या पूरी तरह नेत्रहीन बालकों में यह दोष बहुत अधिक होता है और इन को पूरी तरह से स्पर्श और श्रवण संवेदी अंग पर आश्रित होना पड़ता है।

<u>नेत्र हीनता के कारणों में कुछ अन्य कारण</u>-

1-**जन्म से पहले के कारण**-

क-माता द्वारा नशीली दवाओं का सेवन

ख-माता द्वारा गर्भ में तेजसर वाली दवाओं का इस्तेमाल करना

ग-मस्तिष्क ट्यूमर या दिमागी बुखार का होना

घ-गर्भावस्था में मां का कुपोषण का शिकार होना

2-जन्म के समय के कारण-

क-बच्चे के जन्म के तुरंत बाद संक्रामक रोगों से ग्रसित हो जाना

ख-प्रसव के समय उपकरणों का प्रयोग

ग-जन्म के तुरंत बाद ऑक्सीजन की कमी

घ-बेहोशी की दवा का ज्यादा प्रयोग

3-जन्म के बाद के कारण-

क-कैंसर का रोग

ख-कुपोषण खासतौर से विटामिन ए की कमी

ग-दिमाग का ट्यूमर

घ-दुर्घटना की वजह से आंखों की रोशनी का खत्म हो जाना

<u>दृष्टि दोष युक्त बालकों की समस्याएं</u>-

1-सीमित गतिशीलता

2-धीमा वाणी विकास

3-सामाजिक कुसमायोजन

4-सौंदर्य अनुभूति में कमी

5-कम बुद्धि लब्धि

6-व्यक्तित्व विकृतियां

7-शैक्षिक मंदता

<u>दृष्टि दोष युक्त बालकों की पहचान-</u>

1-नेत्र चिकित्सा परीक्षण

2-कक्षा में निरीक्षण

<u>आंशिक रूप से दृष्टिहीन बालकों की शिक्षा व्यवस्था -</u>

1- निम्न दृष्टि साधन

2-समय-समय पर चिकित्सीय परीक्षण

3-कक्षाअनुकूलन

4-विशेष कक्षाएं

5-सुनकर दोहराने का अभ्यास

6-विशेष पाठ्य सहगामी क्रियाएं

7-विशेष शिक्षा सामग्री

8-दृश्य पर आधारित कामों में कमी

<u>नेत्रहीन बालकों की शिक्षा व्यवस्था-</u>

1-विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापक

2-विशिष्ट पाठ्य सहगामी क्रियाएं

3-विशिष्ट उपकरण

4-आवासीय विद्यालय

5-व्यावसायिक प्रशिक्षण

6-शारीरिक शिक्षा

7-विशेष विधियां

<u>अभिभावकों की भूमिका-</u>

1-परिवार की सभी क्रियाओं में उनको शामिल करना

2-अपनी उम्र के दूसरे बच्चों के साथ अंतर क्रिया का मौका देना चाहिए

3-ऐसी बालकों को परिवार के दूसरे लोगों की दया का पात्र ना बनाएं

4-इन्हें अपने रोज के काम को खुद करने का मौका दें।

5-समय-समय पर इनकी शारीरिक जांच खासतौर पर आंखों की जांच करवाते रहें।